© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 07 Issue: 01 | January - March 2016

अभिलेखों का ऐतिहासिक महत्व : हरियाणा क्षेत्र का एक अध्ययन

अमनजीत सिंह शोधार्थी. इतिहास विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

शोध सारः

शोध–पत्र के माध्यम से हरियाणा के इतिहास निर्माण में अभिलेखों के प्रमुख योगदान का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया गया है। ये अभिलेख हरियाणा के अलग–अलग स्थानों से तथा भिन्न–भिन्न लिपि व भाषाओं में प्राप्त हुए है। हरियाणा का सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक मौर्य के काल का है जो बाही लिपि में लिखित है। मुहम्मद–बिन–तुगलक के शासन काल में विक्रम संवत् 1384 का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है जो संस्कृत भाषा में उत्कीण है। अभिलेखों के माध्यम से हम हरियाणा के सांस्कृतिक धार्मिक व राजनैतिक अवस्था की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

© iJRPS International Journal for Research Publication & Seminar

मुख्य शब्दः पुरातात्विक साक्ष्य, ऐतिहासिक, अभिलेख, प्रस्तर, पटिटका

आधुनिक हरियाणा राज्य भारत की अत्यन्त गारवशाील सभ्यताओं को अपने आंचल में सदियों से संभाले हुए हमारे सांस्कृतिक इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। हरियाणा प्रदेश की भौगोलिक स्थिति अति महत्वपूर्ण है। दक्षिण–पश्चिम में राजस्था के रेतीले प्रदेश और अरावली श्रृंखलाओं तथा उत्तर में शिवालिक पर्वतमाला के मध्य स्थित इस प्रदेश मे से होकर ही सिन्धु से गंगाघाटी तक पहुँचने का मार्ग है। पश्चिम से जो लोग भारत के मध्य भाग तक पहुंचे, उन्हें हरियाणा प्रदेश से होकर गुजरना पड़ा। अतः इस प्रदेश का भारतीय इतिहास में सदैव महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

हरियाणा में पुरातात्त्विक खोजों का प्रारम्भ सर एलेक्जेंडर कनिंघम ने किया जिन्होंने चीनी यात्रियों द्वारा वर्णित प्राचीन स्थलों एवं वस्तुओं की खोज की। तत्पश्चात समय–समय पर अनेक विद्वानों के द्वारा इस क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया गया। हरियाणा में अब तक ऐतिहासिक महत्व के लगभग 40 अभिलेख प्राप्त हुए हैं जो विविध प्रस्तर खण्ड, प्रस्तर स्तम्भ, प्रस्तर फलक, मूर्तियों, ताम्र तथा पक्की मिट्टी की वस्तुओं, पट्टियों और ईंटों पर लिखे पाए गए है। निम्नलिखित स्थानों से यह अभिलेख हरियाणा से प्राप्त हुए है।

हरियाणा का सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक मौर्य के शासन काल का है। जो तराशे गये पत्थर के सुन्दर स्तम्भ पर अकित है। यह स्तम्भ तोपरा ग्राम में स्थापित किया गया था।

फिर यहां से इसको फिरोजशाह तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया। अब यह स्तम्भ कोटला फिरोजशाह के एक भवन की ऊपरी मंजिल पर स्थित ह। इस अभिलेख की लिपि ब्राह्मो है और यह लेख भारत की प्राचीनतम लिपि का भी नमूना उपस्थित करता है। तोपरा के इस प्राचीनतम स्तम्भ अभिलेख पर राजविज्ञप्तियां है जो यह प्रमाणित करती है कि मौर्य शासन में यह प्रदेश का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था।

भिवानी जिले की आधुनिक तहसील तोशाम से हमें एक गुप्तकालीन अभिलेख प्राप्त होता है। यह प्रस्तर अभिलेख धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व का है जिसमें दो जलाशयों तथा भगवान विष्णु के मन्दिर निर्माण का उल्लेख है इसकी लिपि गुप्तकालीन है कृष्ण–विष्णु की स्तुति में एक श्लोक है। प्रतिहार सम्राट, आदिवाह, महाराजाधिराज भोज के राज्यकाल का ई.सं. 882 का शिलालेख पेहवा के एक महन्त के घर में दीवार पर उत्कीर्ण है। इसमें घोड़ों के मेले पर एकत्रित हुए कुछ व्यापारियों द्वारा पृथक के पवित्र तीर्थ–स्थान पर यज्ञ वाराह के एक मन्दिर तथा कान्यकुज में कुछ कर्मस्थानों के लिए दान का उल्लेख है। इस अभिलेख से यह प्रमाणित होता है कि नवमी शताब्दी में यह प्रदेश प्रतिहार साम्राज्य का अंग था। इसके साथ–साथ यह भी प्रमाणित होता है कि उस काल में पेहवा का विकास एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में हो गया था। इस शासन काल का एक शिलालेख नवमी शताब्दी का सिरसा से भी प्राप्त हुआ है।

इसके अलावा पेहवा से प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल का बिना तिथि का एक शिलालेख भी प्राप्त हुआ है। इस लेख में तोमर वंशीय सामन्तों के द्वारा पेहवा में विष्णु के तीन भव्य देवालय बनवाने का वर्णन है। लेकिन अब ये देवालय नष्ट हो चुके है। इस अभिलेख वाली शिला लखनऊ के संग्रहालय में सुरक्षित है। अजमेर के चौहान शासकों के अभिलेख भी इस प्रदेश से प्राप्त होते है। जिनमें विक्रमी संवत 1220 का महाराज बीसलदेव चतुर्थ का स्तम्भ लेखः तोपरा से लाए गए और दिल्ली में कोटला फिरोजशाह में स्थापित, अशोक के स्तम्भ पर उत्कीण है। यह लेख अधिक ऐतिहासिक महत्व का है। इसमें महाराज बीसलदेव की विजय–यात्रा का वर्णन है। इसमें लिखा है कि बीसलदेव ने हिमाचल व विन्ध्य प्रदेश को कर देने वाला बनाया तथा यवनों के आतंक का नाश करके हांसी व थानेसर पर अधिकार किया।

चौहान शासक पथ्वीराज द्वितिय का विक्रमी संवत 1224 का हांसी प्रस्तर अभिलेख ऐतिहासिक महत्व का है। इसमें लिखा है कि चाहमान नरेश ने गुहिलवंशीय किल्हण को हांसी के दुर्ग का अधिपति नियुक्त किया था, क्योंकि इस समय लाहौर के यामीनी शासक बार–बार इस क्षेत्र पर आक्रमण कर रहे थे। किल्हण ने हांसी में एक नगर और अन्न के संग्रह के लिए

दो कोष्ठक बनवाए। इसी अभिलेख से यह ज्ञात होता है कि किल्हण द्वारा पंचपुर अर्थात वर्तमान पिंजौर की विजय की गई थी

एक और ऐतिहासिक महत्व का अभिलेख पालम बाडली (पालम्ब–ग्राम) रोहतक से विक्रम संवत 1337 का सुल्तान बलबन के शासन काल का है। इसी अभिलेख में हरियाणा प्रदेश का नाम आया है और लिखा है कि हरियाणा की भूति का पहले तोमरों ने उपभोग किया। अब उस पर सल्तनतकालीन शासकों का शासन है। इसमें मुहम्मद गौरी से लेकर बलबन तक के शासकों के नाम क्रमशः दिए गए है। फिर लिखा है कि बलबन राजधानी दिल्ली (दिल्ली) महापुरी में उतर नाम का पुरपति था जिसके पूर्वज सिन्धु नदी के समीप उच्चापुरी में रहते थे। उडर ने अनेक पुण्य कार्य किए । उसी ने यह मनोहर वाटिका बनवाई। यह शिलालेख अब लाल दुर्ग के संग्रहालय में सुरक्षित है।

मध्यकालीन शासकों से हमें मुहम्मद–बिन–तुगलक के शासनकाल का भी एक अभिलेख प्राप्त होता है। यह अभिलेख वि.सं. 1384 का है। इसमें हरियाणा प्रदेश को पृथ्वी का स्वर्ग कहा गया है। हरियाणा के संस्कृत कवियों का देशानुराग इस वाणी में प्रस्फुटित हो रहा है।

नीत्वा दधे वरे आ पृथिव्याः
इतायास्पदे सुदिनत्वे अहम्।।
दृषद्वत्यां मानुषे आपयायां सरस्वत्यां
रे वद् अग्नेः दिदीहि।।

(सरस्वती, दृषर्वती और आप या इन नदियों का प्रदेश हरियाणा) भू–मण्डलय भर में सर्वश्रेष्ठ है और यह समृद्धतम् और धन–धान्य से परिपूर्ण है। दृषद्वती, आपथा और सरस्वती नदी के किनारे अग्नि की स्थापना, ऋषि इसलिए करता हैं, क्योंकि इससे अधिक धन–धान्य सम्पन्न भाव भू–मण्डल में दूसरा नहीं है।

प्रशस्ति–पत्र तथा शिलालेखों के अलावा हरियाणा से पक्की मिट्टी की आकृति तथा फलक पर भी अभिलेख प्राप्त हुए है। जिनमें से दो उल्लेखनीय व रोचक है। इनमें से एक शुंगकालीन है जो सुघ से प्राप्त हुआ है जिसमें पक्की मिट्टी की एक आकृति में एक पट्टिका के साथ एक शिशु को स्वरों का प्रारम्भिक पाठ लेते दर्शाया है। इससे उस काल की शिक्षा पद्धति पर प्रकाश पड़ता है। इसके अलावा नौवी शती ई. के पक्की मिट्टी की एक गुटिका पर सात स्वर नि, ध, य, म, ग रि, स) विपरित क्रम में उत्कीर्ण पाए गए है।

निष्कर्षः

अन्त में निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि इतिहास लेखन में अभिलेखों का ऐतिहासिक महत्त्व साहित्यिक साक्ष्यों से अधिक होता है। ये इतिहास के विश्वसनीय स्त्रोत होते हैं। अभिलेखों से हमें उस काल की राजनैतिक घटनाओं के अलावा उस काल की भाषा व लिपि की भी जानकारी होती है। हरियाणा के प्राचीन अभिलेखों के अनुशीलन स प्रतीत होता है कि लगभग 400 ई. से 120 ई. तक इस प्रदेश की साहित्यिक भाषा संस्कृत भी तथा ब्राह्म लिपि का प्रयोग होता था जो शनैः शनैः देवनागरी के रूप में विकसित हो रही थी।

हरियाणा प्रदेश के पुरातत्व की दृष्टि से समृद्ध है। भारत में पुरातत्त्व की दृष्टि से इतने अधिक महत्व के प्रदेश बहुत कम है। यह कथन नितान्त सत्य है कि हरियाणा में लोग इतिहास के बीच निवास करते है। लेकिन अभी भी हरियाणा के कुछ अन्य महत्वपूर्ण स्थलों पर विशुद्ध उत्खनन कराएं जाने की आवश्यकता है। इन स्थलों के उत्खनन से हरियाणा के इतिहास में नए आयाम जुडेंगे और हमारी संस्कृति पर अमूल्य प्रकाश पड़ेगा साथ ही भारत के इतिहास से सम्बन्धित अनेक समस्याओं के समाधान में भी महत्वपूर्ण योगदान की आशा की जा सकती है।

संदर्भ सूचीः

प्रकाश, बुद्ध, हरियाणा : एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण

गोयल जयभगवान, हरियाणा : पुरातत्त्व, इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं लोकवार्ता

दुःखी लीलाधर, हरियाणा की सांस्कृतिक विरासत

यादव शंकर लाल, हरियाणा प्रदेश का लोक साहित्य

यादव के.सी., हरियाणाः ऐतिहासिक सिंहावलोकन

एस.आर.फोगाट, हरियाणा के अभिलेख

गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, प्राचोन भारतीय अभिलेख